नाभिकीय-अपशिष्ट से ईंधन

428. **सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 15 मार्च, 1990 के "फाइनैन्शियल एक्सप्रैस" में "एनवेसटस योल्ड बैटर-क्लेम्स स्टडी" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित समाचार की ओर गया है;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा किये गये अध्ययन के फलस्वरूप सामने आए निष्कर्षों को लागू करने का विचार रखती है;

(ग) यदि हां, तो इस संबंध में विस्तृत योजना का ब्यौरा क्या है; और

(घ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा. राजा रमन्ना) : (क) जी, हां।

(ख) भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा संबंधित तकनीकी पहलुओं की जांच की जा रही है। निष्कर्ष लागू करने से पहले और अनुसंधान तथा विकास कार्य करने की जरूरत है।

(ग) तथा (घ) मौजूदा स्थिति में कार्यान्वयन की विस्तृत योजना का प्रश्न ही नहीं उठता। तथापि, उल्लेखनीय है कि किया जाने वाला अध्ययन अपशिष्ट सामग्री में मौजूद परायूरेनियम मूल तत्वों से संबंधित है जोकि उस सामग्री में बहुत ही कम मात्रा में होते हैं। अध्ययन का ज्यादा जोर इस बात पर है कि अपशिष्ट सामग्री में मौजूद परायूरेनियम मूलतत्वों को अलग कर दिया जाए ताकि उनसे पैदा हो सकने वाले खतरे कम से कम हों तथा उन तत्वों को आगे ईंधन के रूप में काम में लाया जा सके।

पंजाब में प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक

429. **श्री राम जेठमलानी :** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 5 अप्रैल, 1990 के "ट्रिब्यून" में "प्राइमरी स्कूलस स्टावर्ड आफ जे. बी. टीज. शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित समाचार की ओर गया है;

(ख) यदि हां, तो मार्च, 1990 में पंजाब में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या कितनी थी और उनमें कार्यरत अध्यापकों की कुल संख्या कितनी थी; और

(ग) क्या अध्यापकों की संख्या विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में कम है; यदि हां, तो कुल कितने अध्यापकों की आवश्यकता है और इस शैक्षणिक वर्ष में इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चिमन भाई मेहता) : (क) जी, हां।

(ख) और (ग) 30 सितम्बर, 1988 से सम्बन्धित उपलब्ध सूचना के अनुसार, पंजाब में 12357 प्राइमरी स्कूल तथा 47493 शिक्षक हैं। अखिल भारतीय अनुपात 44 की तुलना में शिक्षक-छात्र अनुपात 40 है। अतः शिक्षकों की संख्या असन्तोषजनक नहीं है। शिक्षकों की नियुक्ति तथा पदों का भरा जाना एक सतत प्रक्रिया है जो छात्रों के दाखिले, नए स्कूलों के खोले जाने, रिक्तियों के लिए उपयुक्त आवेदकों की उपलब्धता और राज्य योजनाओं में संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के प्रधान के विरुद्ध शिकायत

430. **डा. जितेन्द्र कुमार जैन :** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 21